"महामंडलेश्वरअवधेशानंद गिरि जी" पर लिखे उपन्यास 'तप और तपस्या' के लोकार्पण कार्यक्रम में माननीय स्पीकर महोदय का सम्बोधन

---

1. आज का दिन बड़े सौभाग्य का दिन है कि मुझे जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर श्री अवधेशानन्द गिरि जी महाराज एवं संत समूह के दर्शन का सुवअसर मिला है। आज एक बार फिर देवभूमि हरिद्वार में आकर अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ।

2. यहां का हरिहर आश्रम मन को असीम शांति देता है। यहाँ का वातावरण अद्भुत है। यहां का पवित्र, शांत और मनोरम वातावरण यहां आने वाले सभी लोगों को परम शांति की अनुभूति कराता है।

3. आज यहाँ हम सब महामंडलेश्वर स्वामी श्री अवधेशानन्द गिरि जी महाराज के जीवन पर लिखे गए उपन्यास **'तप एवं तपस्या'** के लोकार्पण के लिए एकत्रित हुए हैं। यह उपन्यास एक महान योगी और संन्यासी के जीवन संदेशों को बताता है।

4. इस उपन्यास की लेखिका श्रीमती शोभा त्रिपाठी जी को विशेष रूप से साधुवाद। स्वामी जी जैसे दिव्य व्यक्तित्व के सभी आयामों को एक पुस्तक में समेटना, उनके विविध कार्यों का संकलन करना कठिन कार्य है। आपने जिस निष्ठा और लगन से इस कार्य को पूरा किया है, यह आचार्यश्री के आशीर्वाद के बिना संभव नहीं था।

5. आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज एक अलौकिक व्यक्तित्व के स्वामी हैं। आचार्य जी महान आध्यात्मिक गुरु, संत, लेखक और दार्शनिक हैं जिन्होंने तप और तपस्या के बल पर अलौकिक सिद्धि प्राप्त की है। आपको जूना अखाड़े का प्रथम पुरूष भी माना जाता है।

6. स्वामी अवधेशानंद जी ने भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व में सनातन संस्कृति और परंपरा का प्रचार - प्रसार किया है। आपने हिंदू धर्म ग्रंथों की अत्यंत सरल भाव में व्याख्या की है। स्वामी जी के ओजस्वी प्रवचनों ने जनमानस को जाग्रत करने का काम किया है।

7. स्वामी जी ने अपने उपदेशों, ज्ञान और विद्वता से हमारा ज्ञानवर्धन किया है और हमें प्रेरणा दी है। गुरूदेव के व्यक्तित्व में ऐसी दिव्य शक्ति है कि जो कोई भी उनके संपर्क में आता है, उनके स्नेह से, उनके आशीर्वाद से, वह गुरूदेव का ही हो जाता है। गुरूदेव के सान्निध्य में, उनके चरणों में आकर असीम शांति और आनंद की अनुभूति होती है।

8. स्वामी जी ने दुनिया भर में दस लाख से ज्यादा शिष्यों को संन्यास की दीक्षा दी है। संन्यासी का सम्पूर्ण जीवन ही लोक कल्याण के लिए होता है। स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने अपने सेवा कार्यों से

इसे सिद्ध किया है। आपके द्वारा देशभर में कई सामाजिक प्रकल्प चलाए जा रहे हैं जिनसे आम जन लाभान्वित हो रहे हैं। आचार्यश्री ने अनेक पुस्तकों की रचना की है, जो दुनिया को भारत की सनातन संस्कृति के शाश्वत मूल्यों का ज्ञान देती हैं।

9. मुझे स्वामी जी द्वारा स्थापित **'प्रभु प्रेमी संघ'** के बारे में भी पता चला। यह संघ सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का भाव अपनाने और मानव जाति के प्रति सेवा की भावना जागृत करने का संदेश देता है।

10. यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि यह संघ हमारे प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों में निहित समृद्ध ज्ञान के प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। स्वामी जी ने सेवा, सत्संग, स्वाध्याय, संयम, साधना और स्व-उत्थान के जो सिद्धांत बताए हैं, देश-विदेश में स्थित संघ की सभी शाखाओं में उनका अनुपालन किया जाता है।

11. विश्व भर में शांति के संदेश का प्रसार करने तथा हमारी संस्कृति को लोकप्रिय बनाने और वैश्विक शांति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाने के संघ के प्रयास सराहनीय हैं।

12. साथियो, आज हमारा देश अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। मुझे यह स्मरण करते हुए गर्व होता है कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम को भी **'भक्ति आंदोलन'** से बल मिला था। आज जब हम अपने लोकतंत्र की 75 वर्षों की सफल यात्रा का महोत्सव मना रहे हैं तो हमें अपने संतों, मनीषियों और आचार्यों के योगदान को भी याद करना चाहिए।

13. साथियो, भारत की संत परंपरा बड़ी समृद्ध रही है। हमारे संतों, ऋषियों एवं मुनियों ने देश के सामाजिक सांस्कृतिक ताने-बाने को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आप सभी ने सांसारिक जीवन का त्याग कर स्वयं को तप, तपस्या, योग और आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए समर्पित कर दिया है।

14. भारत की महान संस्कृति ने संसार को आदर्श जीवन जीने का संदेश दिया है। दुनिया आज ग्लोबलाइजेशन की बात करती है, हमारे ऋषि-मुनियों ने वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा हजारों वर्ष पहले ही दे दी थी। हमने विश्व के सभी लोगों को अपना परिवार माना। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के मंत्र को अपनाते हुए हमने सबके सुख की कामना की।

15. हमारी संस्कृति में तो कण-कण में ईश्वर का वास माना गया है। हम मानते हैं कि हर एक जीव में ईश्वर का अंश होता है। नर को नारायण मानकर सेवा करना भी हमारी संस्कृति हमें सिखाती है। मैं नहीं समझता कि ऐसी परोपकारी और समावेशी संस्कृति दुनिया में दूसरी कोई होगी।

16. आज दौड़ भाग करती दुनिया में हम देखते हैं कि अनेक लोग तनाव और अवसाद में जीते हैं। भारतीय दर्शन और परंपरा तनाव से मुक्ति का मार्ग भी बताती है। योग, ध्यान और भक्ति हमारी परंपरा के अभिन्न अंग रहे हैं। स्वस्थ जीवनशैली के लिए भारत ने दुनिया को योग का उपहार दिया है।

17. आचार्य श्री ने भी दुनिया भर में योग और भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार द्वारा लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने का कार्य किया है।

18. अभी इसी महीने 21 जून को पूरी दुनिया ने भारत के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया है। स्वामी जी, आपने अमेरिका के न्यूयॉर्क में एक भव्य कार्यक्रम में 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह' का नेतृत्व किया था। अनेक लोगों ने आपसे प्रेरणा पाकर योग, अध्यात्म और ध्यान को जीवन का अभिन्न अंग बनाया है। इस दिशा में मैं आपके अमूल्य योगदान का अभिनंदन करता हूँ।

19. एक समय था, जब अध्यात्म और ध्यान को साधु-संन्यासियों का काम माना जाता था। लेकिन स्वामी जी जैसे मनीषियों ने आध्यात्मिकता को आम जन से जोड़ा है।

20. आज हम देखते हैं कि भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में अध्यात्म और ध्यान पर बड़े-बड़े विमर्श चलते हैं। श्रीमद्भागवत गीता के साथ-साथ हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रंथों पर शोध हो रहे हैं। मेडिटेशन के माध्यम से आज साधारण व्यक्ति भी मन को शांत और मजबूत बनाने के लिए अभ्यास करता है, अध्यात्म में मन लगाता है। यह आप जैसे मनीषियों के प्रयासों एवं कार्यों का परिणाम है।

21. स्वामीजी, आपने जल की स्वच्छता और माँ गंगा की निर्मलता के लिए भी कार्य किए हैं। पर्यावरण और प्रकृति से आपको अगाध प्रेम है।

22. आपने सदा ही विकास और पर्यावरण के बीच समुचित सामंजस्य स्थापित करने का संदेश दिया है। आज के युग में पर्यावरण संरक्षण के लिए यह एक आदर्श विचार है।

23. एक संत को अत्यन्त संयमित जीवन जीना पड़ता है। तप, तपस्या और साधना के लिए स्वयं को समर्पित करना पड़ता है। स्वामी जी, आपने कम आयु में संन्यास लिया, हिमालय की कंदराओं में वास किया। यह एक दैविक शक्ति ही है, जिसने आपको इतना सशक्त बनाया कि आप निःस्वार्थ भाव से जनकल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं।

24. मैं आशा करता हूँ कि पूज्य स्वामीजी के जीवन पर रचा गया यह उपन्यास **'तप और तपस्या'** देश की युवा पीढ़ी को संस्कारित करेगा, उन्हें अध्यात्म और अनुशासन के लिए प्रेरित करेगा।

25. यह उपन्यास पाठकों को आत्मबल और आत्मविश्वास देगा, उनमें आंतरिक ऊर्जा का संचार करेगा और हम सबको प्राणी मात्र के कल्याण के लिए प्रेरित करेगा।

26. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर लेखिका शोभा त्रिपाठी जी को बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि जी महाराज को प्रणाम करता हूँ। आप सभी को नमस्कार करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।